होलिएस्ट बाप की बच्ची में होली
रूप में एक हूँ स्वरुप में भोली
आया बनकर वो मेरा हम झोली
रंग दिया मेरा मन बोल कर मीठी बोली
सूद बुद मैं अपनी देख उसको भूली
हो गयी पागल उसके प्रेम में.. मैं छोरी
कर दिया जादू.. मैं हो गयी बेकाबू
मुरली की धुन सुन चुपके से भागी आऊँ
ज्ञान पिचकारी वो भर -भर मारे
भीगी चुनर मोहे उसके समीप लाये
रंगी जाऊ सुख, शांति ,आनन्द में..मैं मुस्काऊ
होली बन होलिएस्ट के संग सब वचन निभाऊँ
आया वो कर श्रृंगार घर लौट ले जाने
अब चलने न कोई भी उलटे बहानें
अविनाशी प्यार है हमारा दुनियां जानें
जीते जी मर कर नव जीवन दिया उसने
सौभाग्यवती हूँ ,अवनाशी सिंदूर पाया मैंने
कल्प कल्प यह प्रेम- मिलन का यादगार हर पल मनाऊँ

ॐ शांति!!